IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महेश्वर हथकरघा उद्योग में कार्यरत महिला बुनकरों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन

डॉ. डी. के. वर्मा

प्राध्यापक, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) म.प्र.

गीतांजलि वर्मा

सामाजिक विज्ञान एवं प्रबंधन अध्ययन शाला, ब्राउस, महू

सार –

ऐतिहासिक युग से ज्ञात हथकरघा बुनाई महेश्वर के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। महेश्वर में हथकरघा उद्योग के द्वारा रोजगार के अवसर पैदा करने और बुनकरों की आजीविका बनाए रखने मैं अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है वर्तमान अध्ययन में खरगोन जिले के महेश्वर मैं स्थित हथकरघा महिला बुनकर आर्थिक स्थिति का अध्ययन किया गया है यह अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक डाटा स्टोर तो दोनों के आधार पर किया गया है इस विश्लेषण से पता चलता है कि बुनकरो की आार्थिक तंगी स्वास्थ्य समस्या और सरकारी सहायता की कमी के कारण कमजोर है।

कीवर्ड – हथकरघा बुनकर, विपणन, समस्याएं, डिजाइन, यार्न।

प्रस्तावना – प्रस्तुत शोध–पत्र महेश्वर हथकरघा बुनकर महिलाओं की आर्थिक स्थिति के अध्ययन पर है, बुनकरों की आर्थिक स्थिति उनकी हथकरघा बुनाई पर निर्भर करती है उनके हथकरघा कार्य से ही जीवन निर्वाह होता है परिवार का पालन पोषण भी बुनकरों के ऊपर रहता है मासिक आय की जानकारी के साथ ही आय से किये गये व्यय की जानकारी व बचत संबंधी विवरणो का अध्ययन है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति को जानेगे।

होलकर वंश का रेहवा समाज भी माहेश्वरी साड़ियों के वंश की रक्षा के लिए 1978 से लगातार कार्य कर रहा है। उन्होंने जनसांख्यिकी के कारण जीवनशैली में बदलाव देखा और सूट, बैग, चादरें, घरेलू सामान आदि में हथकरघा लाते हुए आधुनिकता को जोड़ते हुए सौंदर्य परिवर्तन का सुझाव दिया। यह रेहवा समाज का निरंतर प्रयास है और सरकार ने इसे मध्य की सीमाओं को पार करते हुए एक वैश्विक नाम बना दिया है। विभिन्न घरेलू (मुंबई, दिल्ली आदि) और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों (फ्रांस, यूके, जर्मनी आदि) के लिए पहुंचाते।

महेश्वर हथकरघा बुनकर उद्योग का परिचय – महेश्वर, महेश्वरी साडियों के उद्योग के लिए विश्व में प्रसिद्व है महेश्वर हथकरघो की नीव होल्कर राज्य की रानी देवी अहिल्या बाई होल्कर ने सन् 1967 ई. में रखी गई थी बुनकरों के द्वारा वस्त्रों पर कई प्रकार से कारीगरी की जाती है जिससे वस्त्रों की सुंदरता बढ जाती है यहॉ पर नर्मदा नही बहती है जिसके भिन्न – भिन्न घाट बने है तथा उन तटीय घाटों पर बनी गई कारीगरी को बुनकरो ने महेश्वरी साडियों के पल्लू व बार्डर पर उतारा साथ ही अन्य वस्त्रों पर भी डिजाइन डाली गई। जिससे वस्त्रों की शोभा बहुत अधिक बढ जाती है यहॉ पर लगभग 6000 हथकरघे कार्यशील अवस्था में है जिन पर 4–5 हजार बुनकर कार्यरत है जो भी वस्त्र बुनकर बनाते है वह महेश्वर के नाम से विश्व में प्रसिद्व है व निर्यात किये जाते है। उनकी लोकप्रियता अधिक है।

मध्यप्रदेश का खरगोन जिला अपनी ऐतिहासिक एवं अहिल्याबाई होल्कर की कुशल शासन एवं पुरानी इमारतो के कारण प्रसिद्व है। यहां अहिल्याबाई होल्कर द्वारा निर्मित महेश्वर का किला एवं राजवाडा अपनी ऐतिहासिक कहानी दर्शाते है। महेश्वर का किला अपनी ऐतिहासिक एवं प्राचीनता के कारण पर्यटन की दृष्टि से देश–विदेश में प्रसिध्द है। महेश्वर का किला पर्यटन की दृष्टि से काफी प्रसिध्द है। महेश्वर का किला मां नर्मदा के पावन तट पर बसा हुआ है। यहां का तट अपनी ऐतिहासिक शिल्पकारी के कारण बहुत प्रसिध्द है। यहां के प्राकृतिक दृश्य बडे ही सुन्दर व मनोहर प्रतीत होता है।

महिला बुनकरों की आर्थिक स्थिति – महिला बुनकरों की आर्थिक स्थिति को जानना अत्यंत आवश्यक है उनकी वार्षिक आय कितनी होती है तथा परिवार पर उनको किन– किन आवश्यकताओं पर व्यय करना पडता है साथ ही उनकी कितनी बचत होती है ये सभी जानकारियॉ प्राप्त करने हेतु हमे आर्थिक पक्ष को जानना अत्यंत आवश्यक है उनके जीवन में इन पक्षो का प्रत्यक्ष रूप से क्या प्रभाव पडता है, बहुत सी बार बुनकरों को अपनी इच्छाओं व भावनाओं की त्याग करना पडता है। क्योकि उनके सामने सीमित आय सीमित व्यय होता है साथ ही भविष्य में जरूरत पडने पर बचत का ही उपयोग करना पडता है हमारे द्वारा शोध में इन परिस्थितियों से सम्बन्धित जानकारियॉ प्राप्त की गई है।

उद्देश्य – महेश्वर हथकरघा उद्योग में कार्यरत महिला बुनकरों की आर्थिक स्थिति में आय, व्यय एवं बचत की स्थिति का अध्ययन करना।

साहित्य का पुर्नरावलोकन –

वाराणसी हथकरघा बुनकरों के परम्परागत व वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन करना। इस अध्ययन में उन्होने 1979 से वर्तमान में 8 मिलियन बढोतरी को देखा गया।

रोनेन वर्ग एट अल 2000 – हथकरघा उद्योग में कार्यरत उद्यमियों में फोलिक एसिड की प्रभाव की कमी का अध्ययन किया गया। जिसमें फोलिक एसिड की 43 प्रतिशत कमी व बी6 की व आयरन की हीनता भी 44 प्रतिशत के बीच पाई गई।

शॉ (2015) ने वाराणसी, उत्तर प्रदेश के पारंपरिक हथकरघा बुनकरों की वर्तमान स्थिति के अध्ययन में निष्कर्ष निकाला है कि बिजली करघों द्वारा पूंजीवादी उत्पादन और कम श्रम मजदूरी दरों ने इस क्षेत्र में पारंपरिक हथकरघा उद्योग के पतन में योगदान दिया है। बुनकरों द्वारा अर्जित आय को आजीविका को बनाए रखने में अपर्याप्त होने के रूप में पहचाना गया, जिससे ऋणग्रस्तता का लगातार संकट पैदा हो गया।

प्रताप और नायडू (2015) ने आंध्र प्रदेश के वोंटीमिट्टा मंडलिन कडपा जिले में हथकरघा उद्योग पर अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि भोजन, कपड़े और दवा पर अधिकांश खर्च के साथ, बुनकरों को विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत प्राप्त किसी भी लाभ से वंचित किया गया था। , विशेष रूप से सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली स्वास्थ्य बीमा योजना।

राव और श्रीधर (2017) ने आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के गन्नवरम मंडल में हथकरघा बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों के अपने अध्ययन में सहकारी क्षेत्र के खराब प्रदर्शन के साथ–साथ बुनकरों के बीच उच्च गरीबी दर की घटनाओं को देखा।

सेन (2018) ने पश्चिम बंगाल में हथकरघा बुनकरों की स्थिति का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि उत्पादित प्रति साड़ी की कमाई काफी कम है, जो अक्सर अकुशल मजदूरों के लिए मनरेगा के तहत दी जाने वाली मजदूरी और निर्माण श्रमिकों या ऑटो रिक्शा चालकों की दैनिक मजदूरी से कम है।

पॉल (2019) ने पश्चिम बंगाल के दक्षिण दिनाजपुर में अपने अध्ययन में क्षेत्र में हथकरघा उद्योग की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करने और बुनकरों के सामने आने वाली समस्याओं की पहचान करने का लक्ष्य रखा। उन्होंने पहचाना कि प्राथमिक बुनकर सहकारी समितियों के पतन ने बुनकरों की आय के स्तर में गिरावट को बढ़ा दिया और उनकी खराब सामाजिक आर्थिक स्थितियों में योगदान दिया।

शोध पद्वति – शोध अध्ययन में हमारे द्वारा खरगोन जिले के महेश्वर तहसील का चयन किया गया है यहॉ हमने महिला बुनकरो को लिया गया है उनकी आर्थिक स्थितियों का अध्ययन किया गया है जिनमें आय, व्यय एवं बचत को लिया गया

है महेश्वर में स्थित हथकरघा महिला बुनकरो का चयन किया गया, जो परिवार का भरण पोषण हथकरघा कार्य के द्वारा ही करती है इसमें हमने साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है यही हमारा समग्र भी है।

तथ्यों का सारणीयन एवं वर्गीकरण –

शोध–पत्र में एकत्रित तथ्यों को मुख्य सारणीयों में प्रस्तुत किया गया है उसी के अनुसार उनके प्रतिशतों को ग्राफ आलेख के द्वारा प्रदर्शित भी किया गया है इसमें बुनकरो के आर्थिक स्थिति से संबंधित विवरण है–

तालिका – 1

आय से संबंधित बुनकरों का विवरण

क्रमांक	आय का विवरण	आवृति	प्रतिशत
1.	20000 से कम	50	15.6
2.	20000 से 50000	231	72.2
3.	50000 से अधिक	39	12.2
कुल		320	100

(आलेख देखे अन्तिम पृष्ठ पर)

तालिका – 2

व्यय से संबंधित बुनकरों का विवरण

क्रमांक	व्यय का विवरण	आवृति	प्रतिशत
1	भोजन	160	50
2	शिक्षा	75	23.4
3	भौतिक संसाधन	40	12.5
4	स्वास्थ्य	45	14.1
कुल		320	100

(आलेख देखे अन्तिम पृष्ठ पर)

तालिका – 3

मासिक बचत से संबंधित बुनकरों का विवरण

क्रमांक	बचत का विवरण	आवृति	प्रतिशत
1	उच्च बचत 1000 – 1500	40	12.5
2	मध्यम बचत 700 – 1000	70	21.9
3	निम्न बचत 500 से कम	110	65.6
कुल		320	100

(आलेख देखे अन्तिम पृष्ठ पर)

निष्कर्ष एवं सुझाव – प्रस्तुत तालिकाओं व ग्राफ चार्ट के आंकडों के विवरण से यह विश्लेषण निष्कर्ष के रूप में निकलता है कि महिला बुनकरो की आर्थिक स्थिति के अध्ययन में आय, व्यय एवं बचत के प्रतिशत को देखा तो उन्हे अधिक जागरूकता व आर्थिक सहयोग की जरूरत है आय के स्तरो में उच्च आय में 12.2 प्रतिशत बुनकर है तथा निम्न आय में 72.2 प्रतिशत बुनकर है तथा निम्न आय में 15.6 प्रतिशत बुनकर है जो उनकी आय को दर्शाता है।

व्यय संबंधित बुनकरों का विवरण देखे तो भोजन पर 50 प्रतिशत खर्च है व शिक्षा पर 23.4 प्रतिशत खर्च है व भौतिक सुविधाओं पर 12.5 प्रतिशत खर्च है एवं स्वास्थ्य पर 14.1 प्रतिशत खर्च पाये गये। जो व्यय की स्थिति को दर्शाते है।

बुनकरो का बचत विवरण इस प्रकार है उच्च बचत (1000 – 1500) तक की बचत में 12.5 प्रतिशत बुनकर है एवं मध्यम बचत (700 – 1000) तक की बचत में 21.9 प्रतिशत बुनकर है एवं निम्न बचत में (500 से कम) बचत वाले 65.6 प्रतिशत बुनकर शामिल है जो उनमें जीवन की आर्थिक स्थिति को दर्शाते है जिससे उनकी पारिवारिक आर्थिक स्थिति को जाना जा सकता है।

सुझाव –

हमारे द्वारा शोध अध्ययन के बाद उपरोक्त आर्थिक स्थिति चिंताजनक है उन्हे आय में और अधिक बढोतरी की जरूरत है जिससे उनके व्यय व बचत की स्थिति में परिवर्तन लाया जा सके और उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सके तथा उनको सरकार के द्वारा चलाई जा रही मुफ्त सुविधाओं की भी जानकारी दी जा सके। जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची '–

1. हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र – टी. एम. अंसारी
2. व्यवसायिक प्रबंध के सिद्वांत – आर. सी. अग्रवाल
3. सांख्यिकी के मूल तत्व – डॉ. एच. के. कपील
4. शैक्षिक शोध – डॉ. हंसराज पाल
5. संसाधन प्रबंध का परिचय – डॉ. मंजु शर्मा
6. अनुसंधान सांख्यिकी – डॉ. मंजु पाटनी
7. www.handlooms.nic.in\ maheshwari635442217856964839.pdf
8. Rao. K.S.N. and Rao, T.U.M. (2015), *An Analysis of Handloom Industry in Andhra Pradesh- Challenges vs Government Schemes,* International Journal of Engineering Technology Science and Research (IJETSR), ISSN: 2394-3386, Vol. 2(9)
9. Basu. B. (2016), *Textile Garment and fashion Industry in Odisha, Prospects and Challenges*, Imperial Journal of Interdisciplinary Research (IJIR), ISSN: 2454-1362, Vol. 2(10)

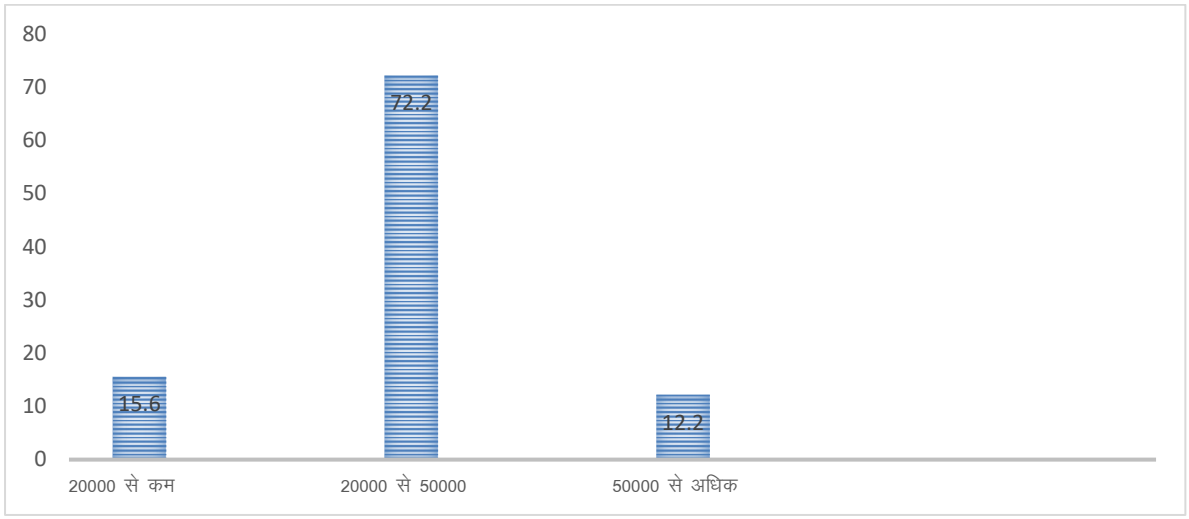
80
70
60
50
40
30
20
10
0
15.6
72.2
12.2
20000 से कम
20000 से 50000
50000 से अधिक

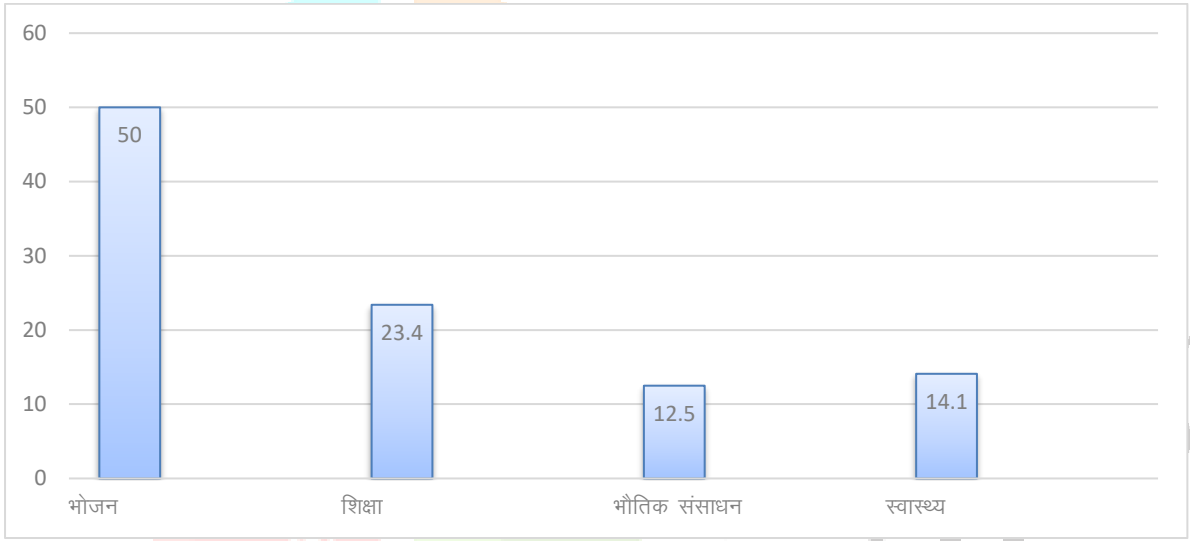
60
50
40
30
20
10
0
50
23.4
12.5
14.1
भोजन
शिक्षा
भौतिक संसाधन
स्वास्थ्य

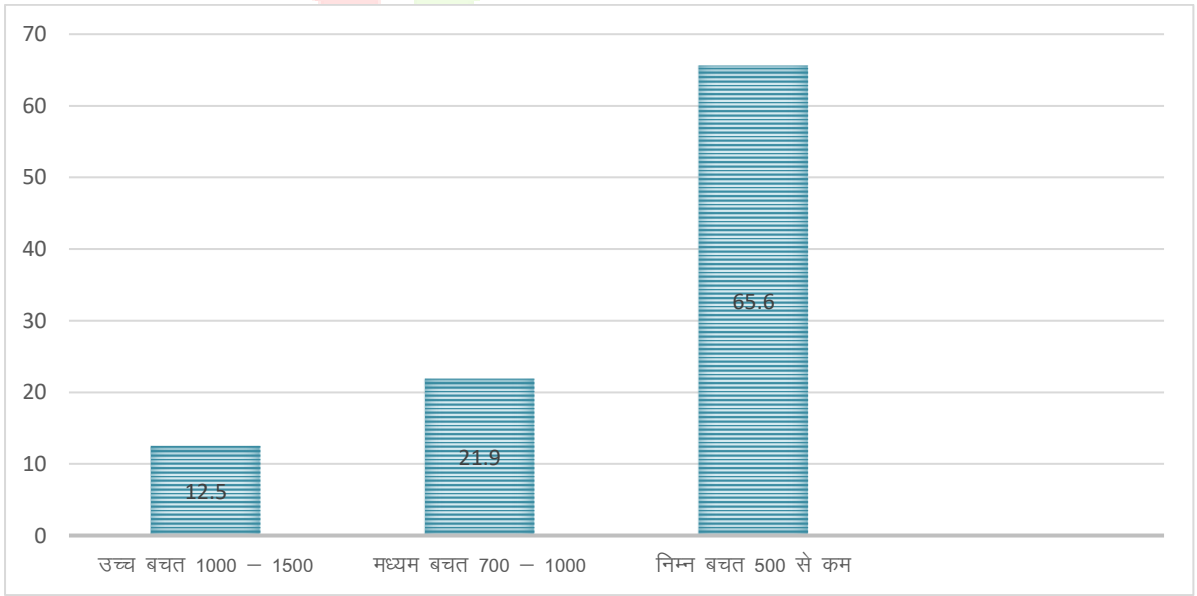
70
60
50
40
30
20
10
0
12.5
21.9
65.6
उच्च बचत 1000 – 1500
मध्यम बचत 700 – 1000
निम्न बचत 500 से कम